विचार बिन्दु

तृण से हल्की रूई होती है और रूई से भी हल्का याचक। हवा इस डर से उसे नहीं उड़ाती कि कहीं उससे भी कुछ न माँग ले। –चाणक्य

बुढ़ापे में स्वास्थ्य का प्रबंध

क्या आप बुढ़ापे की ओर बढ़ रहे हैं? यदि हाँ, तो आज की चर्चा पुनः आपके लिये है। वस्तुतः समय के परिणाम से बुढ़ापा और मृत्यु हर व्यक्ति के जीवन में अंततः आते हैं, और उत्पन्न बुढ़ापे में होने वाली समस्यायें स्वाभाविक हैं। इनकी चिकित्सा नहीं होती (कालस्य परिणामेन जरामृत्युनिमित्तजाः। रोगाः स्वाभाविका दृष्टाः स्वभावो निष्प्रतिक्रियः।। च.शा.1.115)। इनसे डरने की आवश्यकता भी नहीं है। स्वाभाविक जरावस्था को नहीं टाला जा सकता, पर अकाल-जरा या असमय बुढ़ापे की समस्याओं से निपटने के लिये आयुर्वेद में पर्याप्त, प्रभावी और प्रमाण-आधारित उपाय हैं।

बुढ़ापे के लक्षणों को वात-वृद्धि, विषमाग्नि (मन्दाग्नि, तीक्ष्णाग्नि) और दोनों के प्रभाव से कफक्षय के सन्दर्भ में ही समझा जा सकता है। अकाल-जरा या समय से पहले बुढ़ापा आने का मूल कारण त्रिदोष-भड़काऊ जीवन-शैली, अनवरत असात्मऐन्द्रियार्थ संयोग एवं अहर्निश प्रज्ञापराध हैं। क्रमशः होने वाली स्थिति देखें तो वात के प्रकोप से विषमाग्नि (मन्दाग्नि, तीक्ष्णाग्नि) के कारण त्रुटिपूर्ण आहार-रस निर्माण, इसके कारण आम का बनना, आम बनने से भोजन के रस से सार और किट्ट का सम्यक विभाजन गड़बड़ाना, इस कारण अनावश्यक मल-संचय बढ़ना, और मल-संचय से स्त्रोतोरोध व खवैगुण्य होना, और इस स्थिति के लम्बे समय तक रहने से आमविष का निर्माण होने लगता है। ऑटो-इम्युनिटी के पचड़े इसी आमविष कारण लग जाते हैं। दूसरी और विषमाग्नि के कारण भूताग्नि व धात्वाग्नि का ह्रास होता है। फलतः रसधातु में खराबी आने से धातु क्षय होता है।

शरीर की क्रियात्मक समग्र या फिजियोलॉजिकल-इंटेग्रिटी में उत्तरोत्तर होने वाली हानि के कारण बुढ़ापा आता है, जिसके परिणामस्वरूप अंततः मृत्यु होती है। शरीर की क्रियात्मक समग्रता जैसे-जैसे टूटती जाती है वैसे-वैसे मनुष्य कैंसर, मधुमेह, हृदयरोग, न्यूरो डीजेनेरेटिव समस्यायें व क्रोनिक रेस्पिरेटरीट्रैक्ट इन्फ़ेक्शन बढ़ने लगते हैं। आयुर्वेद की भाषा में परिणामकाल और आधुनिक वैज्ञानिक शब्दावली में समय-निर्भर क्रियात्मक गिरावट में पूर्ण साम्य है।

चूँकि आयु पहले से तय नहीं होती है, अतः आयुर्वेद द्वारा प्रदत्त उपायों के उपयोग के जरा-व्याधि का नाश करते हुये जीवन के अंतिम समय तक स्वस्थ रहा जा सकता है। उम्र के साथ बढ़ने वाले रोगों की उत्पत्ति फ्री-रेडिकल्स की बहुलता से ऑक्सीडेटिव स्ट्रेस बढ़ने और इनफ्लेमेशन के कारण होती है। यदि आहार, विहार, रसायन, वाजीकरण और औषधियों की युक्तियुक्त व्यवस्था से ऑक्सीडेटिव स्ट्रेस और इनफ्लेमेशन (दर्द या सूज़न) को नियंत्रित कर लिया जाये तो उम्र के आधार पर लगने वाली बीमारियों से बचा जा सकता है।

आयुर्वेद की दृष्टि में जरावस्था में वात का प्रकोप, कफ का क्षय, विषमाग्नि और धातुक्षय को नियंत्रित कर लिया जाये तो समस्याओं का समाधान हो जाता है। आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण यह है कि उम्र के साथ बढ़ने वाले रोगों की उत्पत्ति फ्री-रेडिकल्स की बहुलता से ऑक्सीडेटिव स्ट्रेस बढ़ने और इनफ्लेमेशन के कारण होती है। यदि आहार, विहार, रसायन, वाजीकरण और औषधियों की युक्तियुक्त व्यवस्था से ऑक्सीडेटिव स्ट्रेस और इनफ्लेमेशन (दर्द या सूज़न) को नियंत्रित कर लिया जाये तो बुढ़ापे में लगने वाली बीमारियों से बचा जा सकता है। आयु-आधारित व्याधिजनन या एज-रिलेटेड-पैथोजेनेसिस समकालीन विश्व की सबसे गंभीर समस्या है। बायो-मेडिकल साइंस अभी तक इस समस्या से पार नहीं पा सका है।

बुढ़ापे में वात का प्रकोप तो रहता ही है, वात को प्रकुपित करने वाले कारण या हेतु का अधिक प्रयोग करने पर वात व्याधियां भी विकसित हो जाती हैं। इसलिए वात को भड़काने वाले आहार-विहार नहीं करना चाहियेः (1) बहुत रूखा-सूखा भोजन नहीं खाना चाहिये, (2) व्यायाम में अति नहीं करना चाहिये, पर इसका तात्पर्य यह नहीं कि बंद ही कर दें, (3) उपवास या आंकठ भोजन दोनों से बचना चाहिये, (4) झगड़ा या भिडंत, खासकर अपने से सवाया के साथ, बचना चाहिये, (5) व्यायाम और टहलना लाभकारी है, परन्तु बहुत अधिक चलने से बचना चाहिये, (6) जोर लगाकर प्राकृतिक शारीरिक वेग नहीं निकालें, और न आये हुये वेगों का उदीरण भी नहीं करना चाहिये, (7) आये हुये शारीरिक वेगों को जबरन नहीं रोकना चाहिये, (8) भार-वहन या वजनी वस्तुओं को नहीं ढोना या उठाना चाहिये, (9) बहुत रोना या बहुत हंसना नहीं चाहिये, (10) ऐसी स्थिति न बनायें कि किसी प्रकार की चिन्ता न रह जाये, किन्तु अति-चिन्ता, अति-प्रसन्नता याभयातुरता से भी बचें, (11) विषम शारीरिक या मानसिक चेष्टायें न करें, (12) विरूद्धान्न भोजन या विरुद्धाहार, विषमाशन, या अजीर्ण, या ठंडा-बासी भोजन न करें, (13) दिन में ज्यादा सोनेऔर रात में जागने से बचना चाहिये, (14) हाथी, घोड़ा, खच्चर आदि की सवारी नहीं करें, (15) समुचित आहार-विहार, सद्वृत्त, स्वस्थवृत्त, रसायन एवं आचार रसायन को नियमित दिनचर्या, रात्रिचर्या, व ऋतुचर्या का अंग बनायें।

जहाँ तक भोजन का प्रश्न है, प्रायः मधुर, अम्ल, लवण रसप्रधान, स्निग्ध, उष्ण, मात्रापूर्वक, अच्छी तरह पच जाने पर, तन्मयतापूर्वक, वृष्य, बल्य, वातशामक पदार्थों का सेवन करना चाहिये। आजकल घी व दूध से लोग दूर भागते हैं। पर बुढ़ापे में वात रोगों के समाधान में तेल और घी से बेहतर कोई द्रव्य ज्ञात नहीं है। असल में घी व दूध का निरंतर सेवन उत्तम रसायन है (क्षीरघृताभ्यासो रसायनानां श्रेष्ठम्। च.सू.25.40)। भोजन में गाय का घी सम्यक मात्रा में लेते रहने से बुढ़ापा रोगरहित कटता है, पर ध्यान यह रखना है कि घी की मात्रा बहुत अधिक न हो। ध्यान यह भी रखना है कि बुढ़ापे में घी खाना उपयोगी है पर घी खाने का अधिकार उन्हें ही है जो नित्य अपने बल के आधे तक व्यायाम करते हों।

> **जहाँ तक भोजन का प्रश्न है, प्रायः मधुर, अम्ल, लवण रसप्रधान, स्निग्ध, उष्ण, मात्रापूर्वक, अच्छी तरह पच जाने पर, तन्मयतापूर्वक, वृष्य, बल्य, वातशामक पदार्थों का सेवन करना चाहिये। आजकल घी व दूध से लोग दूर भागते हैं। पर बुढ़ापे में वात रोगों के समाधान में तेल और घी से बेहतर कोई द्रव्य ज्ञात नहीं है। असल में घी व दूध का निरंतर सेवन उत्तम रसायन है।**

असमय बुढ़ापा घेर रहा हो तो गाय के घी (500 ग्राम) में उड़द (150 ग्राम), मूंग (150 ग्राम), तिल (200), सिंघाड़े का आटा (100 ग्राम) मिलाकर कड़ाही में भूनिये। इसमें मिश्री, खांड, इक्षु-शर्करा (300 ग्राम), और गाय के घी (50 ग्राम) में हल्के भुने और छोटे टुकड़े किये हुये ताल मखाना (200 ग्राम) मिलाइये। बाद में द्राक्षा (200 ग्राम), खजूर (200 ग्राम), चिरोंजी (100 ग्राम) व बादाम (200 ग्राम), कालीमिर्च (20 ग्राम), सोंठ (20 ग्राम), पिप्पली (10 ग्राम), दालचीनी (10 ग्राम), जावित्री (3 ग्राम), केशर (3 ग्राम), और इलायची (20 ग्राम) मिला लें। मिश्रण को सुरक्षित रख लीजिये। इस मिश्रण का 25 से 35 ग्राम नाश्ते व रात में केशर मिले गुनगुने दूध के साथ आनंद लीजिये। यह वृष्य, वाजीकर, बल्य, शुक्रवर्धक, रसायन और धातु-पुष्टिकर योग है। तथापि, शर्करा होने के कारण इसका उपयोग मधुमेह के रोगियों के लिये वर्जित है।

असल में बुढ़ापे में वात अकेले नहीं भड़का रहता, बल्कि यह कफ व पित्त को भी उकसाता और शरीर में तमाम यात्रा कराता रहता है या परस्थानिक करता रहता है। बुढ़ापे में वात की समस्या सम्हालने के लिये सबसे सरल सूत्र तो यह है कि दोष, अग्नि, धातुयें, मलक्रिया, सम करने वाली चिकित्सा लें, और आत्मा, इंद्रियों और मन को प्रसन्न रखने वाले काम किये जायें। बुढ़ापे में वात-प्रत्यनीक चिकित्सा, आहार-विहार,पथ्य-अपथ्य का ख्याल रखते हुये जीवन चलाने में आनंद है।

वात-व्याधियाँ प्रायः दुखदायी होती हैं। अतः समुचित रसायनों के प्रयोग द्वारा व्याधियों को आने से रोकना चाहिये। बुढ़ापे में वात-शामक प्रिवेन्टिव उपाय उपयोगी होते हैं। इसके लिये नियमित रूप से आयुर्वेदाचार्य की सलाह से अभ्यंग (तेल से शरीर, सिर और पैरों की स्वयं मालिश), दीपन, पाचन, स्नेहन, स्नेहपान, स्वेदन, विरेचन एवं वस्ति आदि उपयोगी क्रियायें हैं। बुढ़ापे को देर से और कठिनाई से आने देना है तो समय पर युक्तियुक्त कोष्ठ शुद्धि कराते रहना चाहिये (एवं विशुद्धकोष्ठस्य कायाग्निरभिवर्धते। व्याधयश्चोपशाम्यन्ति प्रकृतिश्चानुवर्तते।। इन्द्रियाणि मनोबुद्धिर्वर्णश्चास्य प्रसीदति। बलं पुष्टिरपत्यं च वृषता चास्य जायते।। जरां कृच्छ्रेण लभते चिरं जीवत्यनामयः। तस्मात् संशोधनं काले युक्तियुक्तं पिबेन्नरः।। च.सू.16.17-19)। शुद्धकोष्ठ वाले व्यक्ति की उम्र, प्रकृति, और सात्म्य को जानने वाला वैद्य जिस व्यक्ति के लिये जो रसायन उचित हो उसे उस व्यक्ति में प्रयोग करना चाहिये (शुद्धकोष्ठं तु तं ज्ञात्वा रसायनमुपाचरेत्। वयःप्रकृतिसात्म्यज्ञो यौगिकं यस्य यद्भवेत्। च.चि.1.1.28)। नियमानुसार पंचकर्म, रसायन और वाजीकर का प्रयोग करने से धातुसाम्य बना रहता है, रोग नहीं होते, धातुयें बढ़ती हैं इसलिये बूढ़े होने की गति धीमी हो जाती है (यथाक्रमं यथायोग्यमत ऊर्ध्वं प्रयोजयेत्। रसायनानि सिद्धानि वृष्ययोगांश्च कालवित्।। रोगास्तथा न जायन्ते प्रकृतिस्थेषु धातुषु। धातवश्चाभिवर्धन्ते जरा मान्द्यमुपैति च।। च.सू.7.48-49)। दोष भड़कने के पूर्व ही प्रिवेंटिव शोधन करना अनागत समस्या का निदान परिवर्जन है।

कुछ बातें और भी हैं: (1) महिलाओं के प्रति संयम / मर्यादा रखने वाले लम्बी उम्र, देर से बुढ़ापे में जाना, शरीर-बल और वर्ण, ठोस और स्थिर-मांसपेशी वाले होते हैं (आयुष्मन्तो मन्दजरा वपुर्वर्णबलान्विताः।। स्थिरोपचितमांसाश्च भवन्ति स्त्रीषु संयताः। सु.चि.24.112-113)। (2) व्यायाम करने वाले आदमी को उसके दुश्मन भी डर की मारे नहीं तंग करते। बुढ़ापा भी सहसा नहीं चढ़ता (न च व्यायामिनं मर्त्यमर्दयन्त्यरयो बलात्। न चैनं सहसाऽक्रम्य जरा समधिरोहति। सु.चि.24.41-42)। (3) रूखा-सूखा व मात्रा से कम खाना और अति उपवास करना, शोधन क्रियाओं की अति (पंचकर्म आदि), शोक, वेगों व नींद को रोकना, शरीर के रुक्ष रहने पर रुक्ष उबटन व नित्य रुक्ष स्नान, स्वाभाविक कमजोर गुणसूत्र, वृद्धावस्था, रोगों का लग जाना, और गुस्सा इंसान को बहुत कमजोर (कृश) कर देते हैं (वक्ष्यते वाच्यमतिकार्श्ये त्वतः परम्।। सेवा रूक्षान्नपानानां लङ्घनं प्रमिताशनम्। क्रियातियोगः शोकश्च वेगनिद्राविनिग्रहः।। रूक्षस्योद्वर्तनं स्नानस्याभ्यासः प्रकृतिर्जरा। विकारानुशयः क्रोधः कुर्वन्त्यतिकृशं नरम्।। च.सू.21.10-11)। अतः जरा-व्याधि को युक्तिपूर्वक रोके रहना ही ठीक है। (4) बूढ़े हो रहे लोगों द्वारा नस्य का प्रयोग करने से सिर आदि ऊपर के अंगों में बुढ़ापा अपना असर नहीं दिखा पाता (न चास्य रोगाः सहसा प्रभवन्त्यूर्ध्वजत्रुजाः।। जीर्यतश्चोत्तमाङ्गेषु जरा न लभते बलम्। च.सू.5.62-63)।

भारत में शारीरिक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और आर्थिक समस्याओं वाले लगभग 112 मिलियन बूढ़े लोग हैं। आधुनिक वैज्ञानिक अध्ययनों का निष्कर्ष है कि माथे में सोचने-विचारने की गति धीमी हो रही हो और शारीरिक चाल मंद पड़ने लगे तो समझिये बुढ़ापे की ओर तेज गति से जा रहे हैं। आज दिखाई पड़ने वाले गैर-संचारी रोगों सहित तमाम ऐसे रोगों, जो स्वाभाविक बुढ़ापे की समस्यायें नहीं हैं, उनसे पूरी तरह बचते हुये बुढ़ापे को सुखदायी बनाया जा सकता है। आयुर्वेदाचार्यों की सलाह लीजिये। उत्तम वैद्य से लिये जाने वाले चिकित्सकीय परामर्श का कोई विकल्प नहीं है। स्वयं चिकित्सक की भूमिका में न उतरें। आहार, विहार, रसायन, औषधि या जड़ी-बूटी का प्रयोग अपने आयुर्वेदिक डॉक्टर के परामर्श से ही करें।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय
(इंडियन फारेस्ट सर्विस से सेवानिवृत्त, वर्तमान में राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान में विजिटिंग प्रोफेसर)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं।)

रिक्त पद भरे बिना संभव नहीं है उच्च शिक्षा में गुणवत्ता

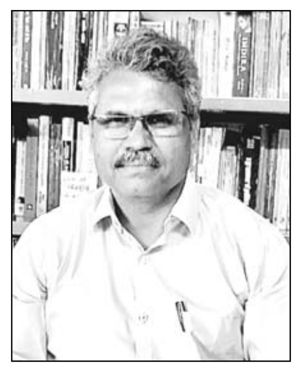

रमेश चंद बैरवा

देश और प्रदेश के विकास के लिए सभी के लिए सस्ती और गुणवत्तापूर्ण सरकारी शिक्षा बहुत अहम है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए सिर्फ विद्यार्थियों के नामांकन में वृद्धि ही पर्याप्त नहीं है बल्कि भवन, कुर्सी, टेबल, बिजली, पानी, टायलेट, लैब, लाइब्रेरी जैसे पर्याप्त भौतिक संसाधन तथा शिक्षक, कर्मचारी एवं प्रशासनिक अधिकारी भी अत्यंत जरूरी है। शिक्षक छात्र अनुपात भी यूजीसी मानकों के मुताबिक होना चाहिए। समुचित मात्रा में बजट भी अत्यंत जरूरी है। लेकिन राजस्थान में स्थिति अत्यंत चिंताजनक है जिस पर राज्य सरकार को गौर कर वर्ष 2025-26 के वित्तीय वर्ष के राज्य बजट में उच्च शिक्षा पर समुचित मात्रा में बजट आवंटित किए जाने का राजस्थान विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय शिक्षक संघ का सादर निवेदन है।

गौरतलब है कि राजस्थान सरकार के उच्च शिक्षा विभाग द्वारा जारी वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन 2024-25 के मुताबिक राजस्थान में राजकीय महाविद्यालय की संख्या 291 है। राजस्थान एजुकेशन सोसाइटी राजसेस संचालित 340 राजकीय महाविद्यालयों को जोड़ने पर यह संख्या 631 है। राज्य वित्त पोषित विश्वविद्यालयों की संख्या 16 है। प्रदेश में कॉलेज एवं विश्वविद्यालय विद्यार्थियों का नामांकन भी तेजी से बड़ा है विशेष कर महिला विद्यार्थियों की संख्या पिछले वर्षों में तेजी से बड़ी है जिसकी मुख्य वजह छात्राओं को दी जाने वाली विभिन्न प्रकार की छात्रवृत्तियां एवं प्रोत्साहन राशि हैं। लेकिन इन सरकारी महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में शिक्षकों एवं अशैक्षिणक कर्मचारियों की भारी कमी के कारण शिक्षा की गुणवत्ता बुरी तरह प्रभावित है। सरकारी महाविद्यालयों में तो स्थिति इतनी चिंताजनक है कि अशैक्षिणक कर्मचारियों की कमी के कारण अशैक्षिणक कार्य प्रोफेसर जैसे उच्च वर्ग के कार्मिक को खुद करने पड़ रहे हैं जिससे नियमित अध्यापन, शोध, सेमिनार एवं अन्य सहशैक्षिणक गतिविधियां भी बुरी तरह प्रभावित हैं।

राजकीय महाविद्यालय के प्राचार्य के स्वीकृत 291 पद में से 117 पद रिक्त हैं। सहआचार्य एवं सहायक आचार्य के 6909 स्वीकृत पदों में से 2605 पद रिक्त हैं। शारीरिक शिक्षक के 291 में से 277, पुस्तकालय अध्यक्ष के 291 में से 274, सहायक लेखा अधिकारी प्रथम के 275 में से 173, प्रशासनिक अधिकारी के 45 में से 19 पद, सहायक प्रशासनिक अधिकारी के 225 में से 119, कनिष्ठ सहायक के 614 में से 422, प्रयोगशाला सहायक के 791 में से 229, जमादार के 39 में से 39, चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी एवं चौकीदार के 1235 में से 902, बुक लिफ्टर के 333 में से 302 पद रिक्त हैं। कुल मिलाकर सरकारी महाविद्यालयों में स्वीकृत 12661 शैक्षिणक एवं अशैक्षिणक स्वीकृत पदों में से सिर्फ 6359 पद पर कार्यरत है तथा 6302 पद रिक्त हैं, अर्थात करीब 50 प्रतिशत पद रिक्त हैं।

राजसेस महाविद्यालयों में प्राचार्य के स्वीकृत 340 पद हैं लेकिन ज्यादातर में नोडल महाविद्यालय से कार्य व्यवस्था पर लगाए हुए शिक्षक नोडल अधिकारी के रूप में अस्थाई व्यवस्था संभाल रहे हैं जो अमानवीय हालातों में कार्य कर रहे हैं क्योंकि इन कॉलेजों में अशैक्षिणक कार्मिक है ही नहीं हैं। राजसेस महाविद्यालयों में सहायक आचार्य के 3867,शारीरिक शिक्षक 297, पुस्तकालय अध्यक्ष के 297, सहायक लेखा अधिकारी प्रथम के 297, प्रशासनिक अधिकारी के 118, अतिरिक्त प्रशासनिक अधिकारी के 222, वरिष्ठ सहायक के 340, कनिष्ठ सहायक के 646, सूचना सहायक के 143, प्रयोगशाला सहायक के 839, प्रयोगशाला परिचारक के 701, कृषि पर्यवेक्षक के 43, चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी एवं चौकीदार के 786, बुक लिफ्टर के 299 सहित कल 9756 पद स्वीकृत हैं। इन कॉलेजों में विद्या संबल योजना के तहत गेस्ट फैकल्टी शिक्षक लगाए जाते हैं जिन्हें अक्सर समय पर नहीं लगाया जाता और पाठ्यक्रम पूर्ण होने से पहले ही हटा दिया जाता है जिसका सबसे बुरा असर प्रदेश में उच्च शिक्षा की गुणवत्ता पर होता है। यह भी ज्ञात हुआ है कि राजस्थान लोक सेवा आयोग अजमेर द्वारा सहायक आचार्य के 1936 एवं कुछ अशैक्षिणक पदों पर भर्ती प्रक्रिया अधीन है।

उल्लेख है कि राजस्थान के 16 राज्य वित्त पोषित विश्वविद्यालयों में भी शैक्षिणक एवं अशैक्षिणक पद बड़ी संख्या में रिक्त हैं। राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर में शिक्षकों के 1883 पर स्वीकृत है जिनमें से 436 पर कार्यरत है तथा 647 पद रिक्त हैं। अशैक्षिणक वर्ग के 1692 स्वीकृत पदों में से 1016 पद रिक्त हैं। जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर में 481 शैक्षिणक पद स्वीकृत है जिनमें से 305 पद रिक्त हैं। अशैक्षिणक वर्ग के स्वीकृत 586 पदों में से 185 पद रिक्त हैं। मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय उदयपुर में स्वीकृत शैक्षिणक 260 में से 98 पद रिक्त हैं। अशैक्षिणक वर्ग के 485 स्वीकृत पदों में से 247 पद रिक्त हैं। महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय अजमेर में 48 शैक्षिणक पर स्वीकृत है जिसमें से 36 पद रिक्त हैं। 334 स्वीकृत अशैक्षिणक पदों में से 124 पद रिक्त हैं। कोटा विश्वविद्यालय कोटा में 86 शैक्षिणक पद स्वीकृत हैं जिनमें से सिर्फ 22 कार्यरत एवं 64 पद रिक्त हैं। अशैक्षिणक वर्ग के स्वीकृत 141 पदों में से 33 पद रिक्त हैं। महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय बीकानेर में स्वीकृत शैक्षिणक 77 पद में से 62 पद रिक्त हैं। अशैक्षिणक वर्ग के स्वीकृत 206 पद में से 122 पद रिक्त हैं।

वर्तमान महावीर खुला विश्वविद्यालय कोटा में 37 शैक्षिणक पद स्वीकृत हैं जिनमें से 19 पद रिक्त हैं। अशैक्षिणक वर्ग के स्वीकृत 301 पद में से 142 पद रिक्त हैं। राज ऋषि भर्तृहरि मत्स्य विश्वविद्यालय अलवर में 45 शैक्षिणक पर स्वीकृत हैं लेकिन अभी तक एक भी पद पर नियुक्ति नहीं हो पाई है। अशैक्षिणक वर्ग के स्वीकृत 53 पद में से 23 पद रिक्त हैं। महाराजा सूरजमल बृज विश्वविद्यालय भरतपुर में 30 शैक्षिणक पद स्वीकृत है। इन पर भी अभी तक कोई नियुक्ति नहीं हुई है।

अशैक्षिणक वर्ग के स्वीकृत 53 पद में से 43 पद रिक्त हैं। पंडित दीनदयाल उपाध्याय शेखावाटी विश्वविद्यालय सीकर में 30 शैक्षिणक पद स्वीकृत है तथा अशैक्षिणक वर्ग के स्वीकृत 76 पद में से 45 पद रिक्त हैं। गोविंद गुरु जनजातीय विश्वविद्यालय बांसवाड़ा में 30 शैक्षिणक एवं 40 अशैक्षिणक श्रेणी के पद स्वीकृत है जिनमें से ज्यादातर पदों पर प्रतिनियुक्ति के जरिए काम चलाऊ व्यवस्था की हुई है। हरिदेव जोशी पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय जयपुर में स्वीकृत 32 शैक्षिणक पद में से 25 अर्थात 78 प्रतिशत पद रिक्त हैं। अशैक्षिणक वर्ग के 63 स्वीकृत पद में से 25 पद रिक्त हैं। एमबीएम विश्वविद्यालय जोधपुर में स्वीकृत 200 शैक्षिणक पद में से 147 तथा अशैक्षिणक वर्ग के स्वीकृत 307 पदों में से 256 पद रिक्त हैं। डॉ.भीमराव अंबेडकर विधि विश्वविद्यालय जयपुर में स्वीकृत सभी 40 शैक्षिणक पद रिक्त हैं तथा 54 अशैक्षिणक स्वीकृत पद में से 53 पद रिक्त हैं। महात्मा गांधी इंस्टिट्यूट ऑफ़ गवर्नेंस और सोशल साइंसेज जयपुर में स्वीकृत शैक्षिणक 40 एवं अशैक्षिणक वर्ग के स्वीकृत सभी 6 पद रिक्त हैं। कार्य व्यवस्था के तहत काम चलाया जा रहा है। अलवर, भरतपुर, सीकर, बीकानेर में खोले गए कुछ वर्ष पूर्व के नए विश्वविद्यालयों एवं डॉ.भीमराव अंबेडकर विधि विश्वविद्यालय जयपुर को तो बजट आवंटन ऊंट के मुंह में जीरे के समान रहा है।

प्रो. रमेश बैरवा
(प्रदेश संयोजक)
राजस्थान विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय शिक्षक संघ-रुक्टा (डेमोक्रेटिक)

शोभायात्रा के साथ "जालोर महोत्सव" का आगाज

जालोर, (कासं)। पर्यटन विभाग, जिला प्रशासन एवं जालोर विकास समिति के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित तीन दिवसिय जालोर महोत्सव-2025 का आगाज शनिवार को शोभायात्रा के साथ हुआ। दिनभर सांस्कृतिक व खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ। वहीं 16 फरवरी को रन फॉर जालोर दौड़ का आयोजन प्रात: 8.30 बजे किया जायेगा। रात्रि 8 बजे बॉलीवुड नाईट रॉक स्टार में स्वागत राठौड़ व पल्लवी दाभोलकर अपने सुरीले आवाज का जादू बिखरेंगे।

जालोर महोत्सव का शुभारम्भ मुख्य सचेतक जोगेश्वर गर्ग ध्वजा लहराकर किया।

जालोर महोत्सव के शुंभारंभ पर जिला मुख्यालय पर पारम्परिक परिधानों में सुसज्जित पुरूष एवं रंग-बिरंगी पोशाकों में महिलाओं व बच्चों सहित बड़ी संख्या में शहरवासी शोभायात्रा में शरीक हुए। राजस्थान विधानसभा के मुख्य सचेतक जोगेश्वर गर्ग, जिला कलेक्टर डॉ. प्रदीप के. गावंडे, जिला पुलिस अधीक्षक ज्ञानचन्द्र यादव व जालोर विकास समिति के सचिव मोहन पाराशर ने हरी झण्डी दिखाकर हनुमानशाला से शोभायात्रा को रवाना कर महोत्सव का आगाज किया जो शाह पूंजाजी गेनाजी स्टेडियम प्रांगण में पहुंची। शोभायात्रा के पश्चात् जालोर महोत्सव का उद्घाटन समारोह राजस्थान विधानसभा के मुख्य सचेतक जोगेश्वर गर्ग के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न हुआ। जालोर विकास समिति के सचिव मोहन पाराशर ने स्वागत उद्बोधन एवं महोत्सव के आयोजन की रूपरेखा के संबंध में विस्तृत जानकारी देते हुए जालोर महोत्सव के कार्यक्रमों उत्साहपूर्वक भाग लेने की बात कही। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राजस्थान विधानसभा के मुख्य सचेतक जोगेश्वर गर्ग ने कहा कि जालोर महोत्सव जालोर जिले के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक वैभव का प्रतीक है।

उन्होंने कहा कि जालोर जिले को पर्यटन एवं विकास के क्षेत्र में आगे बढ़ाने के लिए राज्य सरकार कृत संकल्पित है। जालोर की सांस्कृतिक व ऐतिहासिक ख्याति देश-विदेश में बढ़े, इसके लिए उन्होंने वॉकल फॉर लोकल की तर्ज पर कार्य करने की बात कही। उन्होंने जालोर महोत्सव के माध्यम से जालोर के खेसला उद्योग, जूती उद्योग, ग्रेनाइट उद्योग सहित स्थानीय उत्पादों को प्रोत्साहित किये जाने की बात कही। जालोर महोत्सव में राजीविका की ओर से राजसखी स्थानीय उत्पाद प्रदर्शित किए गए। वहीं पुलिस, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता, भारतीय डाक विभाग, सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग, कृषि, उद्यानिकी, सहकारिता, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य, आयुर्वेद व जिला उद्योग एवं वाणिज्य केन्द्र द्वारा स्टॉल्स के माध्यम से विभागीय योजनाओं के बारे में जानकारी दी जा रही हैं। जालोर महोत्सव के उद्घाटन समारोह में भीनमाल निवासी इंजीनियर भरत वैष्णव ने ड्रोन के माध्यम से लडाकू विमानों की कलाबाजी दिखाई। वहीं गुलाल उडाकर महोत्सव रंगमयी बना दिया। इस अवसर पर जालोर महोत्सव की कोर कमेटी के पन्नालाल सोलंकी, नारायणलाल भट्ट व कानाराम परमार, जालोर महोत्सव के समन्वयक रतन सुथार, रवि सोलंकी, नितिन सोलंकी, सांस्कृतिक समन्वयक रितु टांक, महेश भट्ट गजेन्द्र सिंह सिसोदिया, हितेष प्रजापत सहित जनप्रतिनिधि, गणमान्य नागरिक, महोत्सव के विभिन्न कार्यक्रमों के समन्वयक सहित स्काउट, एनसीसी एवं छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

जालोर महोत्सव के तहत स्टेडियम स्थित नटराज मंच पर सांस्कृतिक प्रतियोगिता का आगाज कार्यक्रम समन्वयक रितु टांक के सानिध्य में हुआ। स्टेडिमय प्रागंण में बनाये गये अलग-अलग मैदानों पर खेलकूद प्रतियोगिताओं का भी आयोजन हुआ।

10 हजार पदोन्नत लेक्चरर की काउंसलिंग अटकी

बीकानेर, (निसं)। 5 हजार पदोन्नत प्रिंसिपल के बाद अब 10 हजार पदोन्नत लेक्चरर की ऑनलाइन काउंसलिंग बीच में ही अटक गई है। पूर्व में जारी टाइम शेड्यूल के मुताबिक पदोन्नत व्याख्याता को 12 फरवरी तक पदस्थापन दिया जाना था, लेकिन पिछले पांच दिनों से सर्वर डाउन होने के कारण काउंसलिंग की प्रक्रिया आगे नहीं बढ़ पाई है। हालांकि प्रिंसिपल की काउंसलिंग को शिक्षा विभाग ने स्थगित कर दिया है, लेकिन पदोन्नत लेक्चरर की काउंसलिंग को लेकर फिलहाल कोई दिशा निर्देश जारी नहीं किए गए हैं। ऐसे में 10515 लेक्चरर असमंजस की स्थिति में हैं।

शिक्षकों का कहना है कि एक ओर शिक्षा विभाग सर्वर डाउन होने का तर्क दे रहा है, दूसरी ओर इसी शाला दर्पण पोर्टल पर आठवीं और पांचवीं बोर्ड परीक्षा के फॉर्म सहित अन्य सभी कार्य पूर्ण किए जा रहे हैं। दरअसल, पदोन्नत लेक्चर काउंसलिंग को तीसरी बार रोका गया है। वरिष्ठ अध्यापक से लेक्चरर पदों की डीपीसी पिछले साल 20 नवंबर को की गई थी, लेकिन अभी तक व्याख्याता को स्कूलों में नई जगह पोस्टिंग नहीं मिली है। काउंसलिंग की प्रक्रिया को बीच में रोकने का शिक्षा विभाग ने भी स्पष्ट कारण नहीं बताया है।

> ■ **पिछले पांच दिन से सर्वर डाउन होने के कारण काउंसलिंग की प्रक्रिया आगे नहीं बढ़ पाई है, 10515 लेक्चरर असमंजस में**

महेंद्र पांडे, मुख्य महामंत्री, राजस्थान प्राथमिक माध्यमिक शिक्षक संघ ने बताया कि ऑनलाइन काउंसलिंग प्रक्रिया को शुरू कर चलती हुई काउंसलिंग का रुक जाना और काउंसलिंग रुकने का कारण नहीं बताना न्याय संगत नहीं है। शिक्षा विभाग को चाहिए कि यदि ऑनलाइन काउंसलिंग संभव नहीं हो रही है तो पदोन्नत शिक्षकों को ऑफलाइन काउंसलिंग के जरिए पदस्थापन दिया जाए।

मनीष कस्वां, प्रदेश महामंत्री, राजस्थान शिक्षा सेवा परिषद का कहना है कि ऑनलाइन काउंसलिंग के अलावा अन्य सभी काम शाला दर्पण पोर्टल पर हो रहे हैं। शिक्षा विभाग सर्वर डाउन के नाम पर बेवजह काउंसलिंग प्रक्रिया को बार-बार स्थगित कर रहा है।

राशिफल रविवार 16 फरवरी, 2025

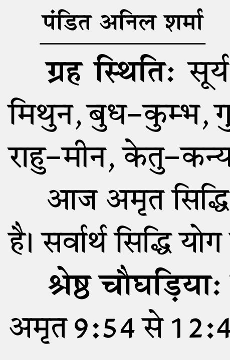

पंडित अनिल शर्मा

फाल्गुन मास, कृष्ण पक्ष, चतुरथी तिथि, रविवार, विक्रम संवत 2081, हस्त नक्षत्र रात्रि 4:31 तक, धृति योग प्रातः 8:06 तक, बव करण दिन 1:04 तक, चन्द्रमा आज कन्या राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-कुम्भ, चन्द्रमा-कन्या, मंगल-मिथुन, बुध-कुम्भ, गुरू-वृष, शुक्र-मीन, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज अमृत सिद्धि योग सूर्योदय से रात्रि 2:16 तक है। सर्वार्थ सिद्धि योग सूर्योदय से रात्रि 4:31 तक है।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः चर 8:30 से 9:54 तक, लाभ-अमृत 9:54 से 12:41 तक, शुभ 2:05 से 3:28 तक।

राहूकालः 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 7:07, सूर्यास्त 6:15

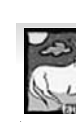

मेष

परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। स्वास्थ्य में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा।

वृष

परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है। आवश्यक और महत्वपूर्ण मामलों में दुविधा बनी रहेगी। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

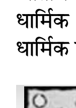

मिथुन

घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

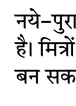

कर्क

आज मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। आज नये-पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकती है। मित्रों के साथ मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

सिंह

पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है। आज वाणी पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा।

कन्या

आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। महत्वपूर्ण कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी।

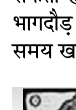

तुला

घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। आज अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है।

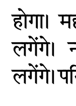

वृश्चिक

आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। महत्वपूर्ण कार्य सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

धनु

अपने अति आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आज प्रयासों में उचित सफलता मिल सकती है। चलते कार्यों में प्रगति होगी। स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी।

मकर

महत्वपूर्ण कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी। व्यक्तिगत प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आज नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

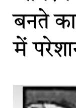

कुंभ

अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। आज आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। नवीन कार्यों में परेशानी का सामना पड़ सकता है।

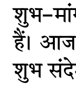

मीन

परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आज महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।